वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 313
ISBN 978-93-80353-31-9

तीर्थंकरत्रय परिचय एवं पूजा

– रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप रजत जयंती महोत्सव–2010 एवं
शांतिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं तीर्थंकरत्रय महामस्तकाभिषेक
महोत्सव (11 से 21 फरवरी 2010) के पावन प्रसंग पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 292943

Website : www.jambudweep.org

E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2536	मूल्य
2200 प्रतियाँ	फरवरी 2010	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

अनादिकाल से भूले-भटके प्राणियों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए, उनकी धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न करने के लिए और स्वपर कल्याण के लिए आचार्यों ने बड़े-बड़े महानतम ग्रंथों की रचना की है।

इसी शृँखला में बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिकाशिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने लगभग 300 ग्रंथों की रचना कर जैन जगत पर महान उपकार किया है। पूज्य माताजी की प्रबल इच्छा रहती है कि नये-नये तीर्थों के निर्माण की अपेक्षा चौबीसों तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियों का विकास-जीर्णोद्धार आदि किया जाये और उनके सर्वोदयी-अहिंसामयी-कल्याणकारी सिद्धान्तों से जन-जन को परिचित कराया जाये। इसी शृँखला में स्वयं उन्होंने अनेकों तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का विकास-जीर्णोद्धार कार्य करवाया है, जिसमें से एक भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ के चार-चार कल्याणकों से पावन हस्तिनापुर तीर्थ है जहाँ निर्मित जम्बूद्वीप रचना को लोग धरती का स्वर्ग कहते हैं।

पूज्य माताजी ने न सिर्फ तीर्थों का उद्धार ही करवाया अपितु उस तीर्थ एवं तीर्थंकरों के गुणानुवाद, उनका लोकोत्तर परिचय प्रदान करने हेतु जनमानस के कल्याण की भावना से अनेकों लघु एवं वृहत्काय ग्रंथों का भी लेखन किया, जिसमें से प्रस्तुत पुस्तक भी उनकी एक अनुपम कृति है, जिसके द्वारा श्रद्धालु भक्तगण भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ का गुणानुवाद करते हुए अपने जीवन को समुन्नत बनावें, यही शुभेच्छा है।

प्राक्कथन

भारतवर्ष की परम पौराणिक ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुरी में आज से करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ एवं अरहनाथ ऐसे तीर्थंकरत्रय के 4-4 कल्याणक हुए हैं, ऐसे 12-12 कल्याणकों के पवित्र यह धरा परम पवित्र मानी जाती है। कभी इस पावन वसुन्धरा पर स्वर्गों से इन्द्रादि ने आकर इन तीर्थंकरत्रय के गर्भ-जन्म-दीक्षा एवं केवलज्ञानकल्याणक मनाए थे।

हस्तिनापुर की यह धरा कौरव-पाण्डव के महाभारत युद्ध से जगप्रसिद्ध रही है। इसी धरा पर कभी अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनियों पर बलि मंत्री द्वारा घोरोपसर्ग किया गया, जिसका निवारण श्री विष्णु कुमार महामुनि ने किया, जिसके फलस्वरूप रक्षाबंधन पर्व चला, जिसे आज पूरे भारत में रक्षा के प्रतीक रूप में मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त रानी रोहिणी, जयकुमार-सुलोचना आदि का प्राचीन कथानक यहीं से जुड़ा हुआ है। अनेक इतिहासों को स्वयं में संजोए हुए, ऐसी यह ऐतिहासिक-पौराणिक भूमि वर्तमान में जैन जगत की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित जम्बूद्वीप रचना के कारण सम्पूर्ण विश्व में ''जम्बूद्वीप'' के नाम से ख्याति को प्राप्त है। यहाँ आने वाला प्रत्येक प्राणी जम्बूद्वीप रचना के दर्शन कर न सिर्फ ब्रह्माण्ड की भौगोलिक रचना से परिचित होता है अपितु यहाँ पर निर्मित नयनाभिराम अद्वितीय जिनमंदिरों के दर्शन कर यहाँ के प्राचीन कथानकों से भी सहज ही परिचित हो जाता है।

पूज्य माताजी का सन् 1974 में इस तीर्थ पर मंगल पदार्पण हुआ, तब से ही उनकी अतीव इच्छा रही कि इन तीर्थंकरत्रय की विशाल प्रतिमाओं को विराजमान करवाया जाये, किन्तु वह पुण्य अवसर अब आया और उन तीर्थंकरत्रय की विशाल प्रतिमाएँ विराजमान होकर जिनधर्म के अहिंसामयी संदेश को जन-जन में पहुँचा रही हैं। उन्हीं तीर्थंकरत्रय की भक्ति में प्रयुक्त यह प्रस्तुत पुस्तक ''तीर्थंकरत्रय परिचय एवं पूजा'' है।

नित्य नूतन योजनाओं की जननी पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने समय-समय पर अनेक कल्याणक तीर्थों एवं अन्य तीर्थक्षेत्रों पर अपनी प्रेरणा देकर अनेक नूतन किन्तु आगमोक्त रचनाओं को प्रादुर्भुत किया है, जिसमें तीनलोक की रचना भी यहाँ निर्मित हो चुकी हैं, जिसके माध्यम से सभी ऊर्ध्व,

मध्य, अधो ऐसे तीनों लोकों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर नरक के दुःखों से भयभीत हो निश्चित ही पुण्योपार्जन की ओर अपने कदम बढ़ाऐंगे। उस तीन लोक में विराजमान जिनप्रतिमाओं की भी इसमें पूजा है, जिसे करके पूजक महान पुण्य का बंध करें।

साररूप में निज पर का उत्थान कर अपनी आत्मा को भगवान आत्मा बनाने वाले ऐसे तीर्थंकरत्रय की भक्तिकर आप सभी महान पुण्य का संचय करें, यही मंगलभावना है।

ब्र. कु. बीना जैन **ब्र. कु. इन्दू जैन**

पुस्तक की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991 (22 अक्टूबर, सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि कावन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर विराजमान भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं के दर्शन।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

विषयानुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	भगवान शांतिनाथ परिचय	1
2.	भगवान कुंथुनाथ परिचय	2
3.	भगवान अरहनाथ परिचय	3
4.	हस्तिनापुर तीर्थ परिचय	4
5.	भगवान शांति-कुंथु-अरनाथ पूजा	9
6.	जम्बूद्वीप पूजा	13
7.	तीनलोक पूजा	18
8.	त्रैलोक्य चैत्यवंदनाष्टक	23
9.	श्री शांतिजिन स्तुति	24
10.	श्री कुंथुजिन स्तुति	26
11.	श्री अरजिन स्तुति	27
12.	शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की आरती	28
13.	जम्बूद्वीप की आरती	29
14.	तीन लोक की आरती	30
15.	भजन (ताल मृदंग बजायके....)	31
16.	शांतिनाथ स्तोत्र (पद्यानुवाद)	32

सोलहवें तीर्थंकर

भगवान शान्तिनाथ : एक दृष्टि में

–गणिनी ज्ञानमती

जन्मभूमि–हस्तिनापुर (जि. मेरठ) उत्तर प्रदेश

पिता–महाराजा विश्वसेन **माता**–महारानी ऐरावती

वर्ण–क्षत्रिय **वंश**–कुरु वंश

देहवर्ण–तप्त स्वर्ण सदृश **चिन्ह**–हरिण

आयु–एक लाख वर्ष **अवगाहना**–एक सौ साठ हाथ

गर्भ–भाद्रपद कृ. सप्तमी **जन्म**–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी

तप–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष–सहस्राम्रवन एवं नंद्यावर्त वृक्ष

प्रथम आहार–मंदिरपुर के राजा सुमित्र द्वारा (खीर)

केवलज्ञान–पौष शु. 10 **मोक्ष**–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी

मोक्षस्थल–सम्मेद शिखर पर्वत का कुन्द कूट

समवसरण में गणधर–श्री चक्रायुध आदि 36 गणधर

मुनि–बासठ हजार **गणिनी**–आर्यिका हरिषेणा

आर्यिका–साठ हजार तीन सौ **श्रावक**–दो लाख

श्राविका–चार लाख **जिनशासन यक्ष**–गरुड़देव

यक्षी–महामानसी देवी

भगवान शांतिनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2536 से पौन पल्य 65,86,536 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

सत्रहवें तीर्थंकर

भगवान कुंथुनाथ : एक दृष्टि में

–गणिनी ज्ञानमती

जन्मभूमि–हस्तिनापुर (जि. मेरठ) उत्तर प्रदेश

पिता–महाराजा सूरसेन **माता**–महारानी श्रीकांता

वर्ण–क्षत्रिय **वंश**–कुरुवंश

देहवर्ण–तप्त स्वर्ण सदृश **चिन्ह**–बकरा

आयु–पंचानवे हजार वर्ष **अवगाहना**–एक सौ चालीस हाथ

गर्भ–श्रावण कृ.दशमी **जन्म**–वैशाख शु. एकम

तप–वैशाख शु. एकम

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष–सहेतुक वन एवं तिलक वृक्ष

प्रथम आहार–हस्तिनापुर के राजा धर्ममित्र द्वारा (खीर)

केवलज्ञान–चैत्र शु. तीज **मोक्ष**–वैशाख शु. एकम

मोक्षस्थल–सम्मेद शिखर पर्वत

समवसरण में गणधर–श्री स्वयंभू आदि 35 गणधर

मुनि–साठ हजार **गणिनी**–आर्यिका भाविता

आर्यिका–साठ हजार तीन सौ पचास **श्रावक**–दो लाख

श्राविका–तीन लाख **जिनशासन यक्ष**–गंधर्व देव

यक्षी–जया देवी

भगवान कुंथुनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2536 से पाव पल्य और 65,86,536 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

अठारहवें तीर्थंकर

भगवान अरहनाथ : एक दृष्टि में

–गणिनी ज्ञानमती

जन्मभूमि–हस्तिनापुर (जिला मेरठ) उत्तर प्रदेश

पिता–महाराजा सुदर्शन **माता**–महारानी मित्रसेना

वर्ण–क्षत्रिय **वंश**–कुरुवंश

देहवर्ण–तप्त स्वर्ण सदृश **चिन्ह**–मछली

आयु–चौरासी हजार वर्ष **अवगाहना**–एक सौ बीस हाथ

गर्भ–फाल्गुन कृ.तीज **जन्म**–मगसिर शु. चतुर्दशी

तप–मगसिर शु. दशमी

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष–सहेतुक वन एवं आम्र वृक्ष

प्रथम आहार–चक्रपुर के राजा अपराजित द्वारा (खीर)

केवलज्ञान–कार्तिक शु. द्वादशी **मोक्ष**–चैत्र कृ. अमावस्या

मोक्षस्थल–सम्मेद शिखर पर्वत

समवसरण में गणधर–श्री कुंभार्य आदि 30 गणधर

मुनि–पचास हजार **गणिनी**–आर्यिका यक्षिला

आर्यिका–साठ हजार **श्रावक**–एक लाख साठ हजार

श्राविका–तीन लाख **जिनशासन यक्ष**–महेन्द्र देव

यक्षी–विजया देवी

भगवान अरनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2536 से 10 अरब 65,86,536 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

तीनलोक रचना

लोक–संसार अनादि-अनिधन–शाश्वत है। ये सात राजु चौड़ा एवं सात राजु ऊँचा है एवं सर्वत्र सात राजु मोटा है। ये नीचे सात राजु चौड़ा, घटते-घटते मध्यलोक में एक राजु पुनः बढ़ते हुए ब्रह्मस्वर्ग के पास 5 राजु, पुनः घटते हुए ऊपर में 1 राजु रह गया है। इसके तीन भेद हैं–अधोलोक, मध्यलोक और ऊर्ध्वलोक। अधोलोक में सात पृथ्वी हैं एवं सबसे नीचे निगोद स्थान है। निगोद से ऊपर सात नरक हैं। मध्यलोक के नीचे की पहली पृथ्वी के तीन भेद हैं– खरभाग, पंकभाग और अब्बहुलभाग। खरभाग, पंकभाग में भवनवासी देवों के 7 करोड़ 72 लाख जिनमंदिर हैं एवं व्यंतर देवों के असंख्यातों जिनमंदिर हैं। अब्बहुलभाग में प्रथम नरक में नारकी हैं।

मध्यलोक में असंख्यात द्वीप-समुद्रों के मध्य तेरहद्वीप तक 458 जिनमंदिर हैं एवं ज्योतिर्वासी देवों में सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र व ताराओं में असंख्यातों जिनमंदिर हैं। ऊर्ध्वलोक में वैमानिक देवों के 16 स्वर्ग, 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश एवं 5 अनुत्तरों में 8497023 जिनमंदिर हैं।

अधोलोक में नरकों में नारकी, मध्यलोक में तीर्थंकर भगवान आदि महापुरुष, सामान्य मनुष्य व तिर्यंच तथा व्यंतर एवं ज्योतिषी देव, ऊर्ध्वलोक में वैमानिक देव रहते हैं।

सबसे ऊपर सिद्धशिला पर अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी विराजमान हैं। इन सब अकृत्रिम व कृत्रिम जिनमंदिर, जिनप्रतिमाओं को, तीर्थंकर भगवन्तों को, महामुनि आदि को एवं सर्वसिद्धों को मेरा अनंतबार नमस्कार होवे।

मध्यलोक में जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड एवं पुष्करार्धद्वीप, ऐसे ढाई द्वीपों में एक सौ सत्तर कर्मभूमियाँ हैं। इनमें से विदेह क्षेत्र में एक सौ साठ कर्मभूमियों में निरन्तर तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण और प्रतिनारायण होते हैं। पाँच भरत और पाँच ऐरावत, ऐसे दश क्षेत्रों में चतुर्थकाल में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 नारायण और 9 प्रतिनारायण, ऐसे 63 शलाका पुरुष होते रहते हैं। इन 170 कर्मभूमियों से ही मनुष्य चारित्र के बल से कर्मों का नाश कर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

तीन लोक रचना को देखकर नरक में न जाने की भावना से सात व्यसन एवं पाँचों पापों का त्याग करना चाहिए तथा स्वर्ग के सुखों को प्राप्त करने के लिए देवपूजा, गुरुभक्ति, तीर्थयात्रा आदि से पुण्य संचय करते हुए मोक्ष को प्राप्त करने की भावना करते रहना चाहिए।

तीर्थंकर शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ एवं अरहनाथ जन्मभूमि

हस्तिनापुर तीर्थ का परिचय

प्रस्तुति—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ऐतिहासिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर अयोध्या के समान ही अत्यन्त प्राचीन एवं पवित्र माना जाता है। जिस प्रकार जैन पुराणों के अनुसार अयोध्या नगरी की रचना देवों ने की थी उसी प्रकार युग के प्रारंभ में हस्तिनापुर की रचना भी देवों द्वारा की गयी थी। अयोध्या में वर्तमान के पाँच तीर्थंकरों ने जन्म लिया तो हस्तिनापुर को शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ इन तीन तीर्थंकरों को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं, इन तीनों जिनवरों के चार-चार कल्याणक (गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान) हस्तिनापुर में इन्द्रों ने मनाए हैं ऐसा वर्णन उत्तरपुराण आदि जैन ग्रंथों में है।

आज से लगभग पौन पल्य 65 लाख 86 हजार 536 वर्ष पूर्व हस्तिनापुर के राजा विश्वसेन की महारानी ऐरादेवी की पवित्र कुक्षि से ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी के दिन सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ ने जन्म लिया था पुनः उनके एक लाख वर्ष पश्चात् राजा सूरसेन की महारानी श्रीकांता ने वैशाख शुक्ला एकम तिथि में सत्रहवें तीर्थंकर कुन्थुनाथ को जन्म दिया तथा उसके चौरासी हजार वर्ष बाद राजा सुदर्शन की महादेवी मित्रसेना के पवित्र गर्भ से मगशिर शु. 14 को 18वें तीर्थंकर भगवान अरहनाथ का जन्म हुआ था। इस प्रकार तीन बार यहाँ पर 15-15 मास तक कुबेर ने अगणित रत्नों की वृष्टि की थी अतः रत्नगर्भा नाम से सार्थक यह भूमि प्राणिमात्र को रत्नत्रय धारण करने की प्रेरणा प्रदान करती है। ये तीनों तीर्थंकर चक्रवर्ती और कामदेव पदवी के धारक भी थे। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को एक वर्ष 39 दिन के उपवास के पश्चात् हस्तिनापुर में ही युवराज श्रेयांस एवं राजा सोमप्रभ ने इक्षुरस का प्रथम आहार दिया था। उस समय भी वहाँ पर देवों द्वारा पंचाश्चर्य वृष्टि की गई थी एवं सम्राट् चक्रवर्ती भरत ने अयोध्या से हस्तिनापुर पधारकर राजा श्रेयांस का सम्मान करके उन्हें ''दानतीर्थ प्रवर्तक'' की पदवी से अलंकृत किया था। पुराण ग्रंथों में वर्णन आता है कि भरत ने उस प्रथम आहार की स्मृति में हस्तिनापुर की धरती पर एक स्तूप का निर्माण करवाया था। आज तो उसका कोई अवशेष देखने को नहीं मिलता है किन्तु इससे यह ज्ञात होता है कि धर्मतीर्थ एवं दानतीर्थ की प्रशस्ति का उल्लेख उसमें अवश्य होगा। काल के

थपेड़ों में वह इतिहास आज लुप्तप्राय हो गया किन्तु हस्तिनापुर एवं उसके आसपास में इक्षु—गन्ने की हरी-भरी खेती आज भी इस बात का परिचय कराती है कि कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व भगवान के द्वारा आहार में लिया गया गन्ने का रस वास्तव में अक्षय हो गया है इसीलिए उस क्षेत्र में अनेक शुगर फैक्ट्री तथा क्रेशर आदि गुड, खांड और चीनी बनाकर देश के विभिन्न प्रान्तों में भेजते हैं।

इसी प्रकार से हस्तिनापुर की पावन वसुन्धरा पर रक्षाबन्धन कथानक, महाभारत का इतिहास, मनोवती की दर्शन प्रतिज्ञा की प्रारम्भिक कहानी, राजा अशोक व रोहिणी का कथानक आदि प्राचीन इतिहास प्रसिद्ध हुए हैं, जिनका वर्णन प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त होता है और हस्तिनापुर नगरी की ऐतिहासिकता सिद्ध होती है।

हस्तिनापुर की अर्वाचीन स्थिति—भारत की आजादी के पश्चात् सन् 1948 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उजड़े हुए हस्तिनापुर को पुनः बसाया था जो कि ''हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन'' के नाम से जाना जाता है। वहाँ आज लगभग 20 हजार की जनसंख्या है एवं शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, डाक व्यवस्था, आवागमन सुविधा आदि के समस्त साधन वहाँ सरकार की ओर से उपलब्ध हैं। टाउनेरिया की सक्रियता से हस्तिनापुर कस्बे की सारी जनता प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवनयापन करती है। यहाँ जैन हिन्दू-मुसलमान, पंजाबी-बंगाली सभी जाति के लोग जातीय एकता के साथ अपने-अपने धर्म एवं ईश्वर की उपासना करते हैं।

तीर्थक्षेत्र की अवस्थिति—सेन्ट्रल टाउन से लगभग डेढ़ किमी. दूर जैन तीर्थ क्षेत्र का अवस्थान है। मेरठ से रामराज जाती हुई मुख्य सड़क से बाईं ओर प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है। वहाँ के परिसर में अन्य कई नये मंदिरों का निर्माण हुआ है तथा इस मंदिर के सामने एक श्वेताम्बर जैन मंदिर भी है। मंदिर से जम्बूद्वीप के आगे जाकर तीन तीर्थंकरों के जन्म की प्रतीक चार नसियाएं दिगम्बर जैन समाज की तथा एक श्वेताम्बर समाज की है, जहाँ भक्तगण श्रद्धापूर्वक दर्शन करने जाते हैं।

जम्बूद्वीप रचना तीर्थक्षेत्र की प्रगति का मुख्य कारण है—सन् 1974 में जब से हस्तिनापुर की धरा पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने जम्बूद्वीप रचना का शिलान्यास करवाया, तब से तो वहाँ की ख्याति देश-विदेश में फैल गई है। 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत से समन्वित जम्बूद्वीप की रचना में विराजमान 207 जिनबिम्ब जहाँ श्रद्धालुओं के

पापक्षय में निमित्त हैं, वहीं गंगा-सिंधु आदि नदियाँ, हिमवन आदि पर्वत, भरत-ऐरावत आदि क्षेत्र, लवण समुद्र जनमानस के लिए मनोरंजन के साधन भी हैं। बिजली-फौव्वारों की तथा हरियाली की प्राकृतिक शोभा देखने हेतु दूर-दूर से लोग जाकर वहाँ स्वर्ग सुख जैसी अनुभूति करते हैं।

जम्बूद्वीप के उस परिसर में कमल मंदिर, ध्यानमंदिर, तीनमूर्ति मंदिर, शान्तिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, तेरहद्वीप मंदिर, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीनलोक रचना, भगवान शांति-कुंथु-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाएँ, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, ऐतिहासिक अष्टापद मंदिर, ज्ञानमती कला मंदिर, तीर्थंकर जन्मभूमि दर्शन एवं थियेटर से समन्वित भारतीय रेल की प्रतिकृति गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस, जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक आदि हैं जो भक्तों को भक्ति और ध्यान- अध्ययन की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

मनोरंजन के साधन—जिनमंदिरों के अतिरिक्त इस परिसर में यात्रियों एवं विशेषकर बच्चों के मनोरंजन हेतु झूले, ट्रेन, ऐरावत हाथी, नौका विहार, हंसी के फौव्वारे आदि अनेक साधन हैं तथा हीरक जयंती एक्सप्रेस यहाँ का विशेष आकर्षण है। इसमें वर्तमान चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की 16 जन्भूमियों का ज्यों का त्यों सचित्र विवरण है इसके साथ ही जम्बूद्वीप थियेटर में धार्मिक फिल्में दिखाई जाती हैं।

आवासीय सुविधा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में—हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पर पहुँचने वाले प्रत्येक तीर्थयात्री के लिए जम्बूद्वीप स्थल पर लगभग 200 कमरे हैं जिनमें से अधिकतर डीलक्स फ्लैट और अनेक कोठियाँ भी आधुनिक सुविधायुक्त हर समय तैयार रहते हैं।

आवास सुविधा के साथ-साथ शुद्ध ''राजा श्रेयांस भोजनालय'' अपने अतिथियों की सुबह से शाम तक सेवा में तत्पर है। जगह-जगह पानी की सुविधा हेतु जलपरी, वाटरकूलर, हैण्डपम्प, नल आदि उपलब्ध हैं।

इन सबके अतिरिक्त जम्बूद्वीप परिसर के विशाल प्रांगण में नित्य ही नवनिर्माण का कार्य चालू रहता है। सुन्दर पक्की सड़कें, हरे-हरे लॉन, फूलों के उद्यान, झूले, नाव, खेल के मैदान, बच्चों की रेल, ऐरावत हाथी आदि परिसर की शोभा में चार चाँद लगाते हैं। कभी-कभी बिजली न होने पर यात्री देर रात तक रुककर जम्बूद्वीप के लाइट-फौव्वारे की शोभा देखकर ही वापस जाने की इच्छा रखते हैं।

यहाँ की स्वच्छता सबको मोह लेती है—जम्बूद्वीप के प्रमुख द्वार तक प्रतिदिन दिल्ली और मेरठ की 10-15 रोडवेज बसें सुबह से शाम तक यात्रियों को लाती और वहाँ से ले जाती हैं। वहाँ उतरकर कल्पवृक्ष द्वार में घुसते ही हर नर-नारी के मुँह से सर्वप्रथम यही निकलता है कि-''ऐसा लगता है स्वर्ग में आ गए''। पुनः वहाँ भ्रमण करने के पश्चात् वे लोग परिसर की स्वच्छता का गुणगान करते नहीं थकते हैं। पूरे स्थल पर कहीं कागज का एक टुकड़ा भी पड़ा नहीं दिखता जो वहाँ के सौन्दर्य में बाधक हो।

इन सबसे प्रभावित होकर ही उत्तरप्रदेश सरकार के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप रचना से हस्तिनापुर की पहचान बनाते हुए विभाग द्वारा प्रकाशित फोल्डर में लिखा है—

Jambudweep is the.....has today blossomed into a man-made heaven of unparallel superlatives and natural wonders.

क्षेत्र पर होने वाले महोत्सव-मेले—हस्तिनापुर तीर्थ पर वर्ष में दिगम्बर-श्वेताम्बर समाज के कई मेले आयोजित होते हैं जिनमें से कार्तिक पूर्णिमा का मेला सर्वप्रमुख है जिसमें जैन समाज से अतिरिक्त अजैन समाज के श्रद्धालु भी भारी संख्या में पहुँचकर गंगा स्नान करते हैं इसलिए इस मेले को ''गंगास्नान मेला'' के नाम से भी जाना जाता है।

इसी प्रकार चैत्र कृष्णा एकम् (होली मेला), अक्षयतृतीया , ज्येष्ठ वदी चौदस और शरदपूर्णिमा ये हस्तिनापुर के प्रमुख मेले हैं तथा समय-समय पर अन्य आयोजन भी वहाँ होते ही रहते हैं। वर्तमान में हस्तिनापुर तीर्थ पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की तपःसाधना का केन्द्र बनकर संसार की दृष्टि में बस गया है। उनके पावन सानिध्य में केन्द्रीय एवं प्रादेशिक स्तर के अनेक उच्चकोटि के राजनेता पधार चुके हैं तथा मेरठ कमिश्नरी का प्रशासन जम्बूद्वीप के नाम से ही श्रद्धावनत है और वहाँ के लघु संकेत पर पर्यटकों के लिए समस्त सुविधाएँ देने को तैयार रहता है।

मैंने हस्तिनापुर तीर्थ का यह अति संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है, वास्तविक परिचय तो वहाँ साक्षात् पहुँचने वाले यात्रियों को स्वयमेव अनुभव में आता है। इस पावन तीर्थ भूमि को शत-शत नमन।

भगवान शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर पूजा

स्थापना –नरेन्द्र छंद

श्रीमन् शांति-कुंथु-अर जिनवर, तीर्थंकर पदधारी।
चक्रवर्ति सम्राट् हुए ये, कामदेव पदधारी।।
तिहुँजग भ्रमण विनाशन हेतू, इनका यजन करूँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, सन्निधिकरण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वरा:अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –नरेन्द्र छंद

तीनलोक भर जाय नाथ मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी तृप्ति न हुई अतः अब, जल से धार दिया है।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में बहु देह धरे मैं, उनसे शांति न पाई।
इसी हेतु चंदन से पूजूँ, मिले शांति सुखदाई।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आत्मसौख्य मुझ, खंड-खंड कर रक्खा।
शालि पुंज से जजूँ अखंडित, सौख्य मिले यह इच्छा।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने तीनजगत को, निज के वश्य किया है।
उसके जेता आप अतः मैं, अर्पण पुष्प किया है।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी से क्षुध व्याधी, भोजन से नहिं मिटती।
व्यंजन सरस बनाकर जिनपद, अर्पण से वह नशती।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर ने तीन जगत् को, अंध समान किये हैं।
दीपक से तुम आरति करके, ज्ञान उद्योत हिये है।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ये संग लगे हैं, इनका नाश करूँ मैं।
तुम सन्निधि में धूप जलाकर, सुरभित धूम्र करूँ मैं।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत कुदेव नमन कर मैंने, अविनश्वर फल चाहा।
फिर भी आश हुई नहिं पूरी, अतः आप ढिग आया।।
शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, स्वर्णथाल भर लाया।
सर्वोत्तम फल हेतु ''ज्ञानमती'', अर्घ्य चढ़ाने आया।।

शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **शांति-कुंथु-अर नाथ के, चरणों में त्रय बार।**
शांतीधारा मैं करूँ, मिले शांति भंडार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल चंपा जुही, सुरभित हरसिंगार।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

तीर्थक्षेत्र को अर्घ

दोहा – **शांति-कुंथु-अरनाथ के, गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान।**
हस्तिनागपुर में हुए, चार कल्याण महान् ।।1।।

ॐ ह्रीं हस्तिनागपुरे गर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथु-अरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-कुंथु-अरनाथ ने, पाया पद निर्वाण।
श्री सम्मेदाचल जजूँ, सिद्धक्षेत्र सुखदान।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरात् निर्वाणपदप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

–दोहा–

हस्तिनागपुर में हुये, काश्यप गोत्र ललाम।
नमूँ-नमूँ नत शीश मैं, शांति-कुंथु-अर नाम।।1।।

–शंभु छंद–

जय शांतिनाथ तुम तीर्थंकर, चक्री औ कामदेव जग में।
माता ऐरावति धन्य हुईं, पितु विश्वसेन भी धन्य बने।।
भादों वदि सप्तमि गर्भ बसे, जन्में वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि में।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित पौष दशमि केवली बने।।2।।

शुभ ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि में, शिवपद साम्राज्य लिया उत्तम।
इक लाख वर्ष आयू चालिस, धनु तुंग चिह्नमृग तनु स्वर्णिम।।
हे शांतिनाथ! तीनों जग में, इक शांती के दाता तुमही।
इसलिये भव्यजन तुम पद का, आश्रय लेते रहते नित ही।।3।।
श्री कुंथुनाथ पितु सूरसेन, माँ श्रीकांता के पुत्र हुए।
श्रावणवदि दशमी गर्भ बसे, वैशाख सितैकम जन्म लिये।।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित चैत्र तीस केवलज्ञानी।
वैशाख सितैकम मुक्ति बसे, पैंतिस धनु तुंग देह नामी।।4।।
पंचानवे सहसवर्ष आयू, स्वर्णिम तनु छाग चिह्न प्रभु को।
सत्रहवें तीर्थंकर छट्ठे, चक्रेश्वर कामदेव तनु हो।।
तुम पदपंकज का आश्रय ले, भविजन भववारिधि तरते हैं।
निजआत्मसौख्य अमृत पीकर, अविनश्वर तृप्ती लभते हैं।।5।।
अरनाथ! सुदर्शन पिता आप, माँ ख्यात मित्रसेना जग में।
फाल्गुन सित तीज गर्भ आये, मगसिर सित चौदश को जन्में।।
मगसिर सित दशमी दीक्षा ले, कार्तिक सित बारस ज्ञान उदय।
प्रभु चैत्र अमावस्या शिवपद, धनु तीस तुंग तनु सुवरणमय।।6।।
चौरासी सहसवर्ष आयू, प्रभु चिह्न मीन से जग जानें।
हम भी तुम पद पंकज में नत, सब रोग शोक संकट हानें।।
जय जय रत्नत्रय तीर्थंकर, जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर।
जय जय मंगलकर लोकोत्तम, जय शरणभूत हे परमेश्वर।।7।।
मैं शुद्ध बुद्ध हूँ सिद्ध सदृश, मैं गुण अनंत के पुञ्जरूप।
मैं नित्य निरंजन अविकारी, चिच्चिंतामणि चैतन्यरूप।।
निश्चयनय से प्रभु आप सदृश, व्यवहार नयाश्रित संसारी।
तुम भक्ती से यह शक्ति मिले, निज संपति प्राप्त करूँ सारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

दोहा – **तुम पद भक्ति प्रसाद से, मिले यही वरदान।**
'ज्ञानमती' निधि पूर्ण हो, मिले अंत निर्वाण।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

जंबूद्वीप पूजा

–स्थापना (दोहा) –

स्वयंसिद्ध यह द्वीप है, जंबूद्वीप महान।
सब द्वीपों में है प्रथम, अनुपम रत्न निधान।।1।।

इसमें शाश्वत जिन भवन, अट्ठत्तर अभिराम।
तीर्थंकर जिन केवली, साधु शील गुण खान।।2।।

इन सब की पूजा करूँ, आत्मशुद्धि के हेतु।
जिन पूजा चिंतामणी, मन चिंतित फल देत।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक (शंभु छंद) –

सुर सरिता का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
भव भव की तृषा बुझाने को, त्रय धारा देने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अष्ट गंध सुरभित लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव भव संताप मिटाने औ, समता रस पीने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि किरणों सम उज्ज्वल तंदुल, धोकर थाली भर लाया हूँ।
निज आतम गुण के पुंज हेतु, यह पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुवलय बेला वर मौलसिरी, मचकुन्द कमल ले आया हूँ।
शृंगार हार कामारिजयी, जिनवर पद भजने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर ताजे, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज आतम अनुभव चखने को, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती के जलते ही, अज्ञान अंधेरा भगता है।
इस हेतू से दीपक पूजा , करते ही ज्ञान चमकता है।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में वर धूप खेय, दशदिश में धूम उठे भारी।
बहु जनम जनम के संचित भी, दुःखकर सब कर्म जलें भारी।।

इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर आम्र बिजौरा नींबू औ, गन्ना मीठा ले आया हूँ।
शिव कांता सत्वर वरने की, बस आशा लेकर आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
तुम चरणों अर्घ चढ़ा करके, भव संकट हरने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

क्षीरोदधि समश्वेत, उज्ज्वल जल ले भृंग में।
श्री जिनचरण सरोज, धारा देते भव मिटे।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

सुरतरु के सुम लाय, प्रभु पद में अर्पण करूँ।
काम देव मद नाश, पाऊँ आनन्द धाम मैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

परम ज्योति परमात्मा, सकल विमल चिद्रूप।
जिनवर गणधर साधुगण, नमूँ-नमूँ निजरूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय सुमेरुगिरि के जिनगृह, सोलह शाश्वत हैं रत्नमयी।
जय जय जिनमंदिर चारों ही, गजदंतगिरी के स्वर्णमयी।।
जय जय जंबूतरु शाल्मलि के, दो जिनमंदिर महिमाशाली।
जय जय वक्षारगिरी के भी, सोलह जिनगृह गरिमाशाली।।2।।

जय जय चौंतिस विजयारध के, चौंतिस जिनमंदिर सुखकारी।
जय जय छह कुल पर्वत के भी, छह जिनगृह भव भव दुःखहारी।।
ये जंबूद्वीप के अठहत्तर, जिनमंदिर अकृत्रिम सुन्दर।
प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमाएँ, हैं इक सौ आठ कहीं मनहर।।3।।

मेरू के पांडुक वन में चउ, विदिशा में चार शिलाएँ हैं।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक से, पावन पूज्य शिलायें हैं।।
इस भरत और ऐरावत में, होते हैं चौबिस तीर्थंकर।
केवलि श्रुतकेवलि गणधर मुनि, साधूगण होते क्षेमंकर।।4।।

उनके कल्याणक से पवित्र, पृथिवी पर्वत भी तीर्थ बने।
जो उनकी पूजा करते हैं, उनके मन वांछित कार्य बनें।।
बत्तिस विदेह के तीर्थंकर, सीमंधर युगमंधर स्वामी।
बाहु सुबाहु जिन विहरमाण, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।।5।।

उन सर्व विदेहों में संतत, तीर्थंकर होते रहते हैं।
केवलज्ञानी चारणऋद्धी, मुनिगण वहाँ विचरण करते हैं।।
आकाशगमन करने वाले, ऋषिगण मेरू पर जाते हैं।
निज आत्म सुधारस स्वादी भी, जिनवंदन कर हर्षाते हैं।।6।।

इस जंबूद्वीप के अठहत्तर, शाश्वत जिन मंदिर को वंदन।
जितने भी कृत्रिम जिनगृह हों, उन सबको भी शत-शत वंदन।।
जितने तीर्थंकर हुए यहाँ, हो रहे और भी होवेंगे।
उन सबको मेरा वंदन है, वे मेरा कलिमल धोवेंगे।।7।।

आचार्य उपाध्याय साधूगण, जो भी इन कर्मभूमियों में।
चिन्मय आत्मा को ध्याते हैं, सुस्थिर होकर निज आत्मा में।।
वे घाति चतुष्टय घात पुनः, अर्हंत अवस्था पाते हैं।
इस कर्मभूमि से ही फिर वे, भगवान सिद्ध बन जाते हैं।।8।।

–दोहा–

पंच परम गुरु जिनधरम, जिनवाणी जिन गेह।
जिन प्रतिमा को नित नमूँ, 'ज्ञानमती' धर नेह।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब-तीर्थंकरकेवलिसाधुभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।।

–दोहा–

जंबूद्वीप की अर्चना, करे विघ्न घन चूर।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे सौख्य भरपूर।।10।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

जम्बूद्वीप मंत्र

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिम-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

शांति मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत्शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

तीनलोक पूजा

–स्थापना (नरेन्द्र छन्द)–

त्रिभुवन के जिनमंदिर शाश्वत, आठकोटि सुखराशी।
छप्पन लाख हजार सत्यानवे चार शतक इक्यासी।।
प्रतिजिनगृह में मणिमय प्रतिमा इकसौ आठ विराजें।
आह्वानन कर जजूँ यहाँ मैं जन्ममरण दुःख भाजें।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (स्रग्विणी छन्द)–

स्वर्ग गंगानदी नीर झारी भरूँ।
नाथ के पाद में तीन धारा करूँ।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध चंदन घिसा के कटोरी भरूँ।
नाथ पादाब्ज अर्चूं सभी दुःख हरूँ।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत तंदुल शशी रश्मि सम श्वेत हैं।
नाथ के अग्र में पुंज सुख हेतु हैं।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद बेला सुगंधित कुसुम ले लिये।
नाथ पादाब्ज में आज अर्पण किये।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर बरफी अंदरसा पुआ लायके।
नाथ के सामने अरु चढ़ाऊँ अबे।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योति लिये आरती मैं करूँ।
मोह हर ज्ञान की भारती मैं भरूँ।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ अबे धूपघट में जले।
कर्म निर्मूल हो देहकांती मिले।।

सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र अंगूर केला चढ़ाऊँ भले।
मोक्ष की आश सह सर्व वांछित फलें।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ में स्वर्ण चांदी कुसुम ले लिये।
नाथ को अर्पहूँ रत्नत्रय के लिये।।
सर्व शाश्वत जिनालय, जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

श्रीजिनवर पादाब्ज, शांतिधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुखसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

–दोहा –

जय त्रिभुवन के जिन भवन, जिनप्रतिमा जिनसूर्य।
नमूँ अनंतों बार मैं, भव्यकमलिनी सूर्य।।1।।

–शम्भु छन्द –

जय अधोलोक के जिनगृह सात करोड़ बहत्तर लाख नमूँ।
जय मध्यलोक के चार शतक अट्ठावन जिनगृह नित्य नमूँ।।
जय वयंतरसुर ज्योतिष सुर के जिनगेह असंख्याते प्रणमूँ।
जय ऊरध के चौरासि लाख सत्यानवे सहस तेईस नमूँ।।1।।

कोटी अठ छप्पन लाख सत्यानवे सहस चारसौ इक्यासी।
जिनधाम अकृत्रिम नमूँ नमूँ ये कल्पवृक्षसम सुखराशी।।
नवसौपचीसकोटी त्रेपन्न लाख सत्तइस सहस तथा।
नव सौ अड़तालिस जिनप्रतिमा मैं नमूँ हरो भव व्याधि व्यथा।।2।।

जिनमंदिर लंबे सौ योजन पचहत्तर तुंग विस्तृत पचास।
उत्कृष्ट प्रमाण कहा श्रुत में मध्यम लंबे योजन पचास।।
चौड़े पच्चीस ऊँचे साढ़े सैंतिस जघन्य लंबे पचीस।
चौड़े साढ़े बारह योजन ऊँचे योजन पौने उनीस।।3।।

मेरु में भद्रसाल नंदन वन के वरद्वीप नंदीश्वर के।
उत्कृष्ट जिनालय मुनि कहते मैं नमूँ नमूँ अंजलि करके।।
सौमनस रुचकगिरि कुंडलगिरि वक्षार कुलाचल के मंदिर।
मनुजोत्तर इष्वाकार अचल मध्यम प्रमाण के जिनमंदिर।।4।।

पांडुकवन के जिनगृह जघन्य मैं नमूँ नमूँ शिर नत करके।
रजताचल जंबू शाल्मलि तरु इनके मंदिर सबसे छोटे।।
ये एक कोस लंबे आधे, चौड़े पौने कोस ऊँचे हैं।
सर्वत्र लघु जिनमंदिर का परिमाण यही मुनि गाते हैं।।5।।

जिनगृह को बेढ़े तीन कोट चहुँदिश में गोपुर द्वार कहें।
प्रतिवीथी मानस्तम्भ बने प्रतिवीथी नव नव स्तूप कहें।।
मणिकोट प्रथम के अंतराल वनभूमि लतायें मन हरतीं।
परकोट द्वितीय के अंतराल दशविधि ध्वजायें फरहरती।।6।।

परकोट तृतीय के बीच चैत्यभूमि अतिशायी शोभती है।
सिद्धार्थवृक्ष अरु चैत्यवृक्ष बिम्बों से चित्त मोहती है।।
प्रतिमंदिर मध्य गर्भगृह इकसौ आठ आठ अतिसुन्दर हैं।
इन गर्भगेह में सिंहासन पर जिनवरबिम्ब मनोहर हैं।।7।।

ये बिम्ब पाँच सौ धनुष तुंग पद्मासन राजें मणिमय हैं।
बत्तीस युगल यक्ष दोनों बाजू में चंवर ढुराते हैं।।
जिनप्रतिमा निकट श्रीदेवी श्रुतदेवी की मूर्ती शोभें।
सानत्कुमार सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति भव्य जन मन लोभें।।8।।

प्रत्येक बिम्ब के पास सुमंगल द्रव्य एक सौ आठ-आठ।
शृंगार कलश दर्पण चामर ध्वज छत्र व्यजन अरु सुप्रतिष्ठ।।
श्रीमण्डप आगे स्वर्ण कलश शोभें बहु धूप घड़े सोहें।
मणिमय सुवर्णमय मालायें चारण ऋषि का भी मन मोहें।।9।।

मुखमंडप प्रेक्षामंडप अरु वंदन अभिषेक मंडपादी।
क्रीड़ा नर्तन संगीत गुणनगृह चित्र भवन विस्तृत अनादि।।
बहुविध रचना इन मंदिर में गणधर भी नहिं कह सकते हैं।
माँ सरस्वती नित गुण गाये मुनिगण अतृप्त ही रहते हैं।।10।।

मैं नित्य जिनालय को वंदूँ नित शीश झुकाऊँ गुण गाऊँ।
जिनप्रतिमा के पद कमलों में बहुबार नमूँ नित शिर नाऊँ।।
प्रत्यक्ष दर्श मिल जाय प्रभो! इसलिये परोक्ष करूँ वंदन।
निज 'ज्ञानमती' ज्योती प्रगटे इस हेतु करूँ शत शत वंदन।।11।।

–दोहा –

चिंतामणि जिनमूर्तियाँ, चिंतित फल दातार।
चिच्चैतन्य जिनेन्द्र को, नमूँ नमूँ शत बार।।12।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशत-एकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलि।

त्रैलोक्य चैत्य वंदनाष्टक

–शम्भु छन्द –

त्रिभुवन के जितने चैत्यालय, अकृत्रिम उनको नित वंदूँ।
भव भव के संचित पाप पुंज, उन सबको इक क्षण में खंडूँ।।
असुरों के चौंसठ लाख नागसुर, के चौरासी लाख कहे।
वायूसुर के छयानवे लाख, सुपरण के बहत्तर लक्ष कहें।।1।।

विद्युत् अग्नी स्तनित उदधि, दिक् द्वीपकुमार भवनवासी।
इन छह में पृथक्-पृथक् जिनगृह, छीयत्तर लक्ष सुगुण-राशी।।
सब लक्ष बहत्तर सात कोटि, ये जिनगृह भवनालय सुर के।
ये अधोलोक के जिनमंदिर, नितप्रति वंदूँ अंजलि करके।।2।।

इस मध्यलोक के पाँच मेरु, के अस्सी तीस कुलाचल के।
रजताचल के इक सौ सत्तर, अस्सी हैं वक्षाराचल के।।
गजदंत गिरी के बीस भवन, जंबू शाल्मलि के दश मानें।
इष्वाकृति नग के चार चार, मनुजोत्तर के भी भव हानें।।3।।

अंजनगिरि के चउ दधिमुख के, सोलह रतिकर के बत्तिस हैं।
नंदीश्वर द्वीप जिनालय ये, बावन अतिशय गुणमंडित हैं।।
कुंडलगिरि रुचकगिरी के भी, हैं चार चार सब मिल करके।
ये चार शतक अट्ठावन हैं, जिनमंदिर मध्यलोक भर के।।4।।

व्यंतरदेवों ज्योतिष सुर के, सब संख्यातीत जिनालय हैं।
इस ऊपर ऊर्ध्वलोक में भी, वैमानिक वंदित आलय हैं।।
सौधर्म स्वर्ग में जिनमंदिर, बत्तीस लाख शाश्वत मानों।
ईशान स्वर्ग में अट्ठाईस, हैं लाख जिनालय सरधानों।।5।।

सानत्कुमार में बारह लख, माहेन्द्र स्वर्ग में आठ लक्ष।
दिव ब्रह्मयुगल में चार लाख, लांतव युग में पच्चास सहस।।
चालिस हजार दिव शुक्र युगल में, छह हजार युग शतार में।
जिननिलय सात सौ आनत औ, प्राणत आरण अच्युत दिव में।।6।।

ग्रैवेयक तीन अधो में हैं, इक सौ ग्यारह मध्यम त्रय में।
हैं इक सौ सात तथा जिनगृह, हैं निन्यानवे ऊर्ध्व त्रय में।।
नव अनुदिश में नव जिनमंदिर, पंचानुत्तर में पाँच कहें।
इन सबका वंदन करते ही, भविजन मनवांछित सिद्धि लहें।।7।।

तीनों लोकों के ये जिनगृह, सब आठ कोटि छप्पन सुलक्ष।
सत्तानवे सहस चार सौ औ, इक्यासी प्रमित कहे शाश्वत।।
नव सौ पच्चीस कोटी त्रेपन, हैं लाख सताइस सहस सही।
नव सौ अड़तालीस जिनप्रतिमा, प्रति जिनगृह इक सौ आठ कहीं।।8।।

सब जिनगृह में अनुपम शाश्वत, मानस्तंभादिक रचनाएँ।
वर्णन पढ़ते ही जन मन में, दर्शन की इच्छा प्रकटाएँ।।
जिनबिंब पांचशत धनुष तुंग, उन वीतराग छवि मनहारी।
मैं केवल ''ज्ञानमती'' हेतू, नित नमूँ जिनालय सुखकारी।।9।।

श्री शांतिजिन स्तुति

–शम्भु छन्द –

श्री शांति प्रभो! शरणागत जन, शान्ती के दाता कहें तुम्हें।
यह धन्य हुई हस्तिनापुरी, जहाँ राज्य किया शांतीश्वर ने।।
विश्वसेन पिता ऐरादेवी, माता का अतिशय पुण्य खिला।
भादों वदि सप्तमि के प्रभु को, गर्भागम का सौभाग्य मिला।।1।।

शुभ ज्येष्ठ वदी चौदस आई, शांतीश्वर ने जब जन्म लिया।
सुरगृह में बाजे बाज उठे, इन्द्रों ने मस्तक नमित किया।।
त्रिभुवन में शांति लहर दौड़ी, नरकों में कुछ क्षण शांति हुई।
गिरि मंदर पर अभिषेक हुआ, उत्सव में भू नभ एक हुई।।2।।

शांतीश प्रभू चक्रीश बने, षट्खंड मही का भोग किया।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदस के दिन, बस चक्ररत्न को त्याग दिया।।

इक शतक साठ कर तनु सुन्दर, आयू इक लाख वर्ष प्रभु की।
तपनीय कनक सम कांति विभो! मृग लांछन से जाने सब ही।।3।।

प्रभु ध्यान चक्र को ले करके, मोहारि नृपति को मारा था।
वर पौष सुदी दशमी के दिन, भव्यों को मिला सहारा था।।
षोडश तीर्थंकर कामदेव, पंचम चक्री त्रय पदधारी।
वर ज्येष्ठ वदी चौदस के दिन, त्रिभुवन साम्राज्य मिला भारी।।4।।

प्रभु नर्क-निगोद अरु विकलत्रय, दुःखों को सहता आया हूँ।
तिर्यंच-मनुज-सुर गतियों के, दुःखों से खूब सताया हूँ।।
नौ महिने तक मैं माता के, उर में औंधे मुँह लटका था।
अति घृणित अशुचि में पड़ा-पड़ा, नहिं किंचित् हिल-डुल सकता था।।5।।

वहाँ श्वांस घुटा करता प्रतिक्षण, नहिं पलभर आँखें खोल सका।
अति घोर कष्ट सहता रहता, नहिं किंचित् भी कुछ बोल सका।।
जैसे-तैसे कर जन्म लिया, उस काल प्रभो! जो कष्ट हुआ।
संख्यातों जिह्वा कह न सकें, फिर कैसे भी मैं कहूँ हहा।।6।।

बचपन में भी मैं मूक रहा, जो-जो दुःख भोगे हैं प्रभुवर।
मैं भूल गया बस फूल गया, कुछ क्षण तरुणाई को पाकर।।
अब इष्टवियोग-अनिष्टयोग के, दुःख से भी घबराया हूँ।
तुम शांती के दाता भगवन्, अतएव शरण में आया हूँ।।7।।

सम्यग्दर्शन औ ज्ञान चरण, ये रत्नत्रय निधि मुझे मिली।
तनु से ममता भव बीज अहा! सम्यग्दृक् कलिका आज खिली।।
हे शांतिनाथ! मैं नमूँ सदा, बस भक्ती का फल एक मिले।
कैवल्य ''ज्ञानमति'' प्राप्त करूँ, बस मुझको सिद्धी शीघ्र मिले।।8।।

श्री कुंथुजिन स्तुति

–शम्भु छन्द –

जितने भी पुद्गल इस जग में, सबको भोगा छोड़ा मैंने।
अब सब उच्छिष्ट सदृश मुझको, हा फिर भी ममता है इनमें।।
नभ के प्रत्येक प्रदेशों को, मैं जन्म-मरण से पूर्ण किया।
त्रिभुवन में जी भर घूम चुका, नहिं कुछ भी क्षेत्र अपूर्ण रहा।।1।।

जो हुए अनंतानंतों ही, उत्सर्पिणि-अवसर्पिणी समय।
उन सबमें जन्म-मरण करता, आया नहिं छोड़ा एक समय।।
चारों गतियों की सब आयू, भोगी है बार अनंतों मैं।
ग्रैवेयक ऊपर नहीं गया, बस इतना बचा दिया मैंने।।2।।

सब मिथ्या अविरति भावों में, क्रोधादि कषाय विभावों में।
इन दुर्भावों में रहा किन्तु, नहिं लिया अपूर्व भाव मैंने।।
इस तरह पंच परिवर्तन से, परिवर्तन करता आया हूँ।
मैं काल अनादी से अब तक, नहिं किंचित् भी सुख पाया हूँ।।3।।

अब काल लब्धि को पाकर मैं, भव भ्रमणों से अकुलाया हूँ।
निज शुद्ध स्वभाव प्रगट करके, स्थिर पद पाने आया हूँ।।
हे कुंथुनाथ! मैं नमूँ तुम्हें, अब दया करो भव फेर हरो।
तुम ही हो शरणागत रक्षक, अब मेरी बार न देर करो।।4।।

यह हस्तिनागपुर तीर्थ बना, प्रभु सूरसेन के घर जन्में।
श्रीकांता माता मुदित हुईं, जब गोद में खेला था तुमने।।
श्रावण वदि दशमी गर्भ तिथी, वैशाख सुदी एकम जनि की।
फिर वही तिथी दीक्षा दिन की, सित चैत्र तृतीया केवल की।।5।।

इक सौ चालिस कर देह तुंग, आयू पंचानवे सहस बरस।
अज लांछन कनक वर्ण सुन्दर, तुम कामदेव चक्रेश्वर प्रभु।।
वैशाख सुदी एकम तिथि में, सम्मेदाचल से मुक्ति वरी।
मुझ ''ज्ञानमती'' कैवल्य करो, बस यही प्रार्थना है मेरी।।6।।

श्री अरजिन स्तुति

–शम्भु छन्द –

अरनाथ! स्वयं अरि कर्मों को, घाता अर्हत्पदवी पायी।
त्रिभुवन के नाथ उदर तिष्ठे, मित्रसेना माता हर्षायी।।
सुरपूज्य सुदर्शन जनक अहो, है धन्य हस्तिनापुरी अहा।
फाल्गुन वदि तीज गर्भ मंगल, मगसिर सुदि चौदस जन्म लहा।।1।।

मगसिर सित दशमी दीक्षा ली, बाह्याभ्यंतर तप तपते थे।
कार्तिक सित बारस के दिन में, केवलज्ञानी रवि चमके थे।।
चौरासि हजार वर्ष आयू, तनु इक सौ बीस हाथ सुन्दर।
मछली लाञ्छन युत कनक वर्ण, प्रभु कामदेव औ चक्रेश्वर।।2।।

शुभ चैत्र अमावस के प्रभुवर, सम्मेदाचल से मृत्युजयी।
निज भेद विज्ञान प्रगट करके, अपने को पाया आप सही।।
मैं भी प्रभु चरण कमल वंदूँ, यह कृपा प्रसाद मिले मुझको।
मैं केवल ''ज्ञानमती'' पाऊँ, मुझसे ही सिद्धि मिले मुझको।।3।।

तीन लोक मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यसंबंधिअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।

तीर्थंकरत्रय मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर-चक्रवर्ति-कामदेवपद-समन्वित-श्री शांतिनाथकुंथुनाथअरनाथ-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

भगवान श्री शांति, कुंथु, अरहनाथ की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे.....

आरती तीर्थंकर त्रय की,
शांति, कुंथु, अरनाथ जिनेश्वर की पदवी त्रय की।।आरती.।।टेक.।।
हस्तिनापुरी में तीनों, जिनवर के जन्म हुए हैं।
मेरू की पांडुशिला पर, इन सबके न्हवन हुए हैं।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।1।।

निज चक्ररत्न के द्वारा, छह खण्ड विजय कर डाला।
तीनों ने उसे फिर तजकर, जिनरूप दिगम्बर धारा।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।2।।

कुरूजांगल के ही वनों में, कैवल्य परम पद पाया।
निज दिव्यध्वनी के द्वारा, आतमस्वरूप समझाया।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।3।।

शुभ चार-चार कल्याणक, तीनों जिनवर के हुए हैं।
हस्तिनापुरी में ऐसे, इतिहास अनेक जुड़े हैं।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।4।।

सम्मेदशिखर तीनों की, निर्वाणभूमि कहलाती ।
''चंदनामती'' प्रभु आरति, से भव बाधा नश जाती।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।5।।

जम्बूद्वीप की आरती

–कु. माधुरी शास्त्री[1]

ॐ जय जम्बूद्वीप जिनं, स्वामी जय जम्बूद्वीप जिनं।
इसके बीचोंबीच सुशोभित, स्वर्णाचल अनुपम।।ॐ जय.।।टेक.।।

जम्बूद्रुम से सार्थक, जम्बूद्वीप कहा।।स्वामी.।।
मणिमय नग चैत्यालय-2, से युत शोभ रहा।।ॐ जय.।।1।।

मेरू सुदर्शन पूर्व अपर में, बत्तिस हैं नगरी।। स्वामी.।।
तीर्थंकर की सतत जहां पर-2 दिव्यध्वनि खिरती।।ॐ जय.।।2।।

सिद्धकूट अरू सुरगृह में भी, जिनप्रतिमा शाश्वत।।स्वामी.।।
ऋद्धि सहित ऋषि वन्दन करके-2 पीते परमामृत।।ॐ जय.।।3।।

सिद्ध केवली तीर्थंकर अरू, परमेष्ठी होते।।स्वामी.।।
इस ही भू पर जन्मे-2 अरू शिव भी पहुंचे ।।ॐ जय.।।4।।

इसी हेतु यह द्वीप जगत में, पावन पूज्य कहा।। स्वामी।।
तीर्थंकर जन्माभिषेक भी-2 करते इन्द्र जहां।।ॐ जय.।।5।।

हस्तिनागपुर में यह रचना, वैभवपूर्ण बनी।।स्वामी.।।
ज्ञानमती की अमरकृती यह-2 सुन्दर सौख्य घनी।।ॐ जय.।।6।।

अठसत्तर जिनगेह अकृत्रिम, अतिशय युत शोभें।।स्वामी.।।
लहें ''माधुरी'' क्रम से शिवपुर-2, जो जिनवर पूजें।।ॐ जय.।।7।।

1. वर्तमान आर्यिका चन्दनामती

तीन लोक की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज - पंखिड़ा.....

आरती करूँ मैं तीन लोक धाम की।
सिद्धप्रभु विराजे जहाँ सिद्धधाम की।। आरती.....।।टेक.।।
तीनलोक में ही अधो-मध्य-ऊर्ध्वलोक हैं।
जहाँ जिनवरों का दर्श करें सभी लोग हैं।।
थाली लेके, दीपक लेके, बाती लेके मैं।
शुद्ध घी को लेके आरती जलाऊँ मैं।।आरती.....।।1।।

अधोलोक के जिनालयों को नमन करूँ मैं।
सात कोटि बाहत्तर सुलक्ष मंदिरों की मैं।
थाली लेके, दीपक लेके, बाती लेके मैं।
शुद्ध घी को लेके आरती जलाऊँ मैं।।आरती.....।।2।।
चार सौ हैं अट्ठावन जिनालय मध्यलोक में।
इनको नमन करूँ तेरहद्वीप में ये बने हैं।।
थाली लेके, दीपक लेके, बाती लेके मैं।
शुद्ध घी को लेके आरती जलाऊँ मैं।।आरती.....।।3।।

लक्ष चुरासी सतानवे सहस व तेइसे।
ऊर्ध्व लोक में ये स्वर्ग विमानों में शोभते।।
थाली लेके, दीपक लेके, बाती लेके मैं।
शुद्ध घी को लेके आरती जलाऊँ मैं।।आरती.....।।4।।
हस्तिनापुरी में तीन लोक रचना बनी है।
लोक अग्रभाग पर ही सिद्धशिला बनी है।।
थाली लेके, दीपक लेके, बाती लेके मैं।
शुद्ध घी को लेके आरती जलाऊँ मैं।।आरती.....।।5।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
तभी ''चंदनामती' सभी की मन कली खिली।।
थाली लेके, दीपक लेके, बाती लेके मैं।
शुद्ध घी को लेके आरती जलाऊँ मैं।।आरती.....।।6।।

भजन

तर्ज–चांदनपुर के गाँव में बुलाले.....

ताल मृदंग बजायके, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभू गुण गाओ।
शांतिनाथ प्रभू गुण गाओ, हस्तिनापुर को शीश झुकाओ।। केसरिया...।।

प्रथम जिनेश्वर ऋषभदेव ने, यहीं प्रथम आहार लिया।
नृप श्रेयांस ने नवधा भक्ति से, इक्षु रस आहार दिया।।
उनकी गाथा याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।1।।

इसी धरा पर शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु ने जनम लिया।
धनकुबेर ने रत्नवृष्टि कर अपना जीवन धन्य किया।।
उनके युग को याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।2।।

इन तीनों तीर्थंकर के, यहाँ चार-चार कल्याण हुए।
फिर सम्मेदशिखर पर्वत से, कर्म नाश शिवधाम गए।।
उनका जीवन याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।3।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में तीन विशाल मूर्तियाँ हैं।
जैनधर्म का प्रमुख केन्द्र यह कहे धर्म की महिमा है।।
इनका वैभव याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।4।।

इसी हस्तिनापुर में सात शतक मुनि पर उपसर्ग हुआ।
विष्णु कुमार मुनीश्वर ने उनके उपसर्ग को दूर किया।।
रक्षाबन्धन याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।5।।

कौरव-पाण्डव का महाभारत युद्ध हुआ इस धरती पर।
पाण्डव विजयी हुए, न्याय का बिगुल बजा इस ही भूपर।।
उनका शासन याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।6।।

जम्बूद्वीप की रचना ने इतिहास पुनः जीवन्त किये।
देश विदेशों के यात्रीगण आते हैं दर्शन करने।।
उस सौंदर्य को देखकर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।7।।

गणिनी ज्ञानमती जी ने जंगल में स्वर्ग बनाया है।
तभी ''चंदनामती'' तीर्थ ने स्वर्णिम गौरव पाया है।।
इनके ज्ञान को देखकर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।8।।

स्वर्णिम तेरहद्वीप की रचना देखके जनता झूम उठी।
इक्किस सौ सत्ताइस प्रतिमाओं की जय जय गूँज उठी।।
उसका अतिशय देखकर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।9।।

तीनलोक की रचना कैसी लगती प्यारी-प्यारी है।
इसका दर्शन करके सब हर्षित होते नर-नारी हैं।।
सिद्धशिला का दर्श कर, सब नाचो गाओ रे, शांतिनाथ प्रभु गुण गाओ।।10।।

भजन

रचयित्री-आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज–सबसे बड़ी मूर्ति का.....

मस्तकाभिषेक करो, प्रभु का अभिषेक करो,
खुशियों की बेला आ गई है, प्रभु की छवि मन को भा गई है।।टेक.।।

पहली बार हस्तिनापुरी में,
तीन प्रभु की मूर्तियाँ बनी हैं,
शांति-कुंथु-अरहनाथ जिनवर।
तीन-तीन पद से सहित हैं सब।।
इन सभी को नमन करो, जनमभूमि यजन करो,
खुशियों की बेला आ गई है, प्रभु की छवि मन को भा गई है।।1।।

क्षीर नीर धार बह रही है।
प्रभु का जन्म याद कर रही है।।
बिना बोले मूर्ति कह रही है।
आत्मा का सार बस यही है।।
अपना मन पवित्र करो, आत्मा में शक्ति भरो,
खुशियों की बेला आ गई है, प्रभु की छवि मन को भा गई है।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती जी हैं।
इनसे ज्ञान ज्योति जो जली है।।
प्रेरणा उन्हीं की अब मिली है।
भक्तगण की मनकली खिली है।।
''चंदनामती'' कहो, जय जय मात की करो,
खुशियों की बेला आ गई है, प्रभु की छवि मन को भा गई है।।3।।

श्री शांतिनाथ स्तोत्र (हिन्दी अनुवाद)

रचयित्री-आर्यिका चंदनामती

–शंभु छंद–

जिनके सिर पर तीन छत्र त्रिभुवन की प्रभुता प्रगट करें।
चंदा के प्रतिबिम्ब सदृश छत्रत्रय शोभित सुखद अरे।।
सदा उदय को प्राप्त दिव्य कैवल्य सूर्यप्रभ मन्द करे।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।1।।

देवदुन्दुभी बजकर मानो जग को यह बतलाती है।
सर्व तत्वज्ञाता त्रिलोकपति शांतिनाथ जिनवर ही हैं।।
उनके दिव्य वचन ही जग में सबको शांति प्रदान करें।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।2।।

जिनके पद में दिव्य अंगनायें जब नमन किया करतीं।
अपने रत्न अलंकरणों से इन्द्रधनुष सम छवि धरतीं।।
समवसरण के मध्य विराजें सबके क्लेश व पाप हरें।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।3।।

नभ में देवों द्वारा पुष्पों की वर्षा प्रभु पर होती।
उस सुगंध से आकर्षित देवों द्वारा स्तुति होती।।
लगता है सुरपुष्पवृष्टि भी जिनवर की संस्तुती करे।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।4।।

दीप्तमान भामण्डल है जिनका प्रभावशाली इतना।
सूर्य चन्द्र का भी प्रकाश जिसके समक्ष जुगनू दिखता।।
अथवा अग्नी के फुलिंग या श्वेत मेघ सम कांति धरें।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।5।।

जिस अशोकतरु के नीचे तीर्थंकर प्रभु ध्यानस्थ रहें।
उसके पुष्पगुच्छ पर मानो भ्रमर भी प्रभु का स्तवन करे।।

पवनप्रकंपित वृक्षलताएँ जिनवर सम्मुख नृत्य करें।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।6।।

अति विस्तृत जो वस्तुतत्व के कथन प्रवाह से उज्वल है।
अति शीतल स्तुत्य तथा जो जगतपूज्य परमोज्वल है।।
हिमगिरि से गिरती गंगा सम ध्वनि से जो मन तृप्त करें।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।7।।

दीप्तमान किरणों युत चंचल चंवर प्रभू पर जो ढुरते।
उनसे संयुत देवभुजाएँ कंकण मधुर ध्वनि करते।।
तीन लोक के नाथ के सम्मुख देव चंवर ले नृत्य करें।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।8।।

श्रुतपारग अति तीव्रबुद्धि धारक भी इन्द्र जिन्हें नमते।
बड़े बड़े स्तोत्रों से भी प्रभु गुण गान न कर सकते।।
पद्मनंदि उन केवलरवि जिनवर की स्तुति भक्ति करें।
ऐसे शांतिनाथ जिनवर हम सबकी रक्षा नित्य करें।।9।।

–दोहा –

शांतिनाथ स्तोत्र का, भाषामय अनुवाद।
किया चन्दनामति सरल, पढ़ो करो सब याद।।10।।
सर्व उपद्रव शांति हित, शांतिनाथ भगवान।
उनकी स्तुति भक्ति से, मिलती शांति महान।।11।।